

नाट्यसंगीत द्वारा साधना

डॉ० प्रवीण सैनी

सहायक प्रोफेसर- संगीत वादन (तबला), गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद

जीवन का उद्देश्य:- भारतीय संस्कृति के अनुसार, जीवन का उद्देश्य है, पुरुषार्थ चंतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति। भारत ने 'अर्थ' और 'काम' की प्राप्ति (सेवन) का कभी निषेध नहीं किया, किन्तु उसने 'अर्थ' और 'काम' के उपभोग को 'धर्म' द्वारा मर्यादित किया, जिससे वह मोक्ष तक पहुंच सके। आहार, निद्रा, भय, मैथुन पशु और मानव दोनों में समान रूप से जन्मजात विद्यमान रहते हैं। मानव योनि प्राप्त करके भी जो इन्हीं चारों में रमा रहा, वह दो पैरों वाला पशु ही है; जो इन चारों से उपर उठा वह महामानव या अवतार बन गया। मानव को पशु से उपर उठने का काम उसकी 'धर्म-भावना' का है: "धर्मेणहीनताः पशुभिः समानाः।।" वैशेषिक दर्शनकार अभ्युदय (लौकिक) और निःश्रेय (पारलौकिक, आध्यात्मिक) की उन्नति हो वह 'धर्म' है: "यतोभ्युदयानिः श्रेयससिद्धि सधर्मः।।"

चित्तवृत्तियों का निरोध जैसे प्राणायाम से होता है, वैसे ही संगीत से भी होता है। प्राण का सम्बन्ध 'आकाश' एवं 'वायु' तत्वों के साथ है। इसी प्रकार संगीत का सम्बन्ध भी इन्हीं तत्वों के साथ है। संगीत का सम्बन्ध नाद से है और नाद का प्राणवहन से। जिस प्रकार प्राणायाम यानि 'प्राण के आयाम' से चित्त शान्त होता है, उसी प्रकार संगीत यानि सांगीतिक नाद से भी चित्त शान्त होता है।

नाट्य संगीत और योग न केवल सृष्टि के साथ ही पैदा हुई संस्कृति के अंग है, वरन् शास्त्राय करने से ज्ञात होता है कि इन दोनों का लक्ष्य, साधन अलग होने पर भी, एक ही है। संगीत जहां आनन्द की पराकाष्ठा का ब्रह्मानन्द कहकर पुकारता है। साथ ही उस साधन में कंठ समेत अनेक अंगों का तारतम्य पूर्ण संचालन को स्वीकार कर अपने लक्ष्य तक पहुंचने की कोशिश करता है। वहीं योग-चित्त, बुद्धि, अहंकार को यम, नियम, आयन, प्राणायाम, प्रत्याहार के माध्यम से ब्रह्मानंद से जुड़ने की बात करता है। अनेक ऐसी मुद्राएं हैं, जो योग और नाट्य दोनों में ही पाई जाती हैं।

योग एक पाठ्यक्रम: अनादि काल से भारतवासियों का जीवन 'आत्म-साक्षात्कार' (अपनी आत्मा को जानने) के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने अनुभव से यह पाया है, की 'योग' एक ऐसा साधन (पाठ्यक्रम) है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार करने में निश्चित रूप से सफल हो सकता है। जिस प्रकार आज के प्रचलित पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चा 'प्राथमिक कक्षा' से पास करता हुआ एम0ए0 की उपाधि तक पहुंच जाता है। आसन-प्राणायाम का नाम ही 'योग' नहीं है। योग जीवन को अनुशासित करने की पद्धति का नाम है। योग का मतलब है 'जीवात्मा और परमात्मा का मिलन'। योग साध्य भी है, और साधन भी। ज्ञानयोग, कर्मयोग, मन्त्रयोग, भक्तियोग आदि अनेक मार्ग हैं। एक बात ध्यान में रखनी होगी कि कोई भी मार्ग 'Water-tight Compartment' जैसा नहीं होता। हर मार्ग की बोधगम्यता, उसके केन्द्र स्थान में होती है और (यहां तक पहुंचने का) मार्ग स्पष्ट होने के लिए अन्य मार्गों की सहायता आवश्यक होती है। साधक के लिए अन्य मार्गों की मदद अपरिहार्य होती है।

स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से अतिसूक्ष्म जगत के नियम के अनुसार Interdependent के बिना उसका अस्तित्व बना रहना असम्भव होता है। वस्तुतः महर्षि अरविन्द के शब्दों में 'सारा जीवन ही योग है।' मीरा के इकतारों में योग है, सुर के करताल में योग है, नरसी के दुतारा में योग है, शिव के डमरू में योग है, सहजोबाई के नृत्य में योग है, हरिदास की वीणा में वह योग है जिसमें तत्कालीन मुगल बादशाह अकबर को भी सुषुप्ति अवस्था में पहुंचाने का सामर्थ्य था। भरत का नाट्य संगीत (गायन-वादन-नृत्य) भी योग साधना ही है। नाट्य दृश्य संगीत है, जिसमें गायन-वादन नृत्य के साथ कुछ दृश्य भी प्रस्तुत किए जाते हैं, कलाकारों की योग साधना होती है और दर्शकों को उस ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

प्राचीन काल में भरत नामक संत इस विद्या (नाट्यशास्त्र)के पुरोधा माने जाते हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ को तत्कालीन लोकसभा 'संस्कृत' में लिखा है। नाट्य में संगीत के अतिरिक्त काव्य, वेशसध्वा, रंजनकला (painting) प्रकाश व्यवस्था, अभिनय (acting) तथा हाव-भाव आदि सभी कलाओं (arts) का समन्वय हो जाता है। इसलिए भरत ने नाट्य को एक दैवी क्रिया कहा है। 'नाट्यशास्त्र' को पंचम वेद भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें चारों वेदों को समाविष्ट किया गया है। भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में वाचन (recitable text) ऋग्वेद से स्वर-लय (melody) सामवेद से, क्रियाकलाप (Acting) यजुर्वेद से, तथा भावाभिव्यक्ति (sentiments impression) अथर्ववेद से लिए हैं।

भारत में, अन्य कलाओं की भांति, नाट्य की उत्पत्ति धर्म से मानी जाती है। अतः नाट्य को भी अनेक नाम-रूपों वाले 'ईश्वर' की सेवा-उपासना आदि का माध्यम माना गया है। श्रीमद्भागवतगीता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण-कर्म-स्वभाव पर आधृत कर्म (vocation) में नैपुण्य (speciality) प्राप्त करके भी आत्मसाक्षात्कार कर सकता है। योग भी एक उपासना पद्धति है, जिससे व्यक्ति उस सर्वशक्तिमान-पूर्ण-सच्चिदानंद का साक्षात्कार करने में समर्थ होता है। इस स्थिति को 'समत्व' (समबुद्धि) की अनुभूति द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। योगशास्त्रकार पतंजलि ने 'चित्त' की 'वृत्तियों' के 'निरोध' को 'योग' कहा है- "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः॥" संक्षेप में, योग का साधक, 'योगी' अपने आप (Self) के ज्ञान से, अपने को समस्त संसार के साथ एकाकार होने की अनुभूति करने का प्रयत्न करता है।

नाट्य में एक सफल अभिनेता (actor) अपने अभिनय द्वारा इसी प्रकार की अनुभूति का प्रदर्शन करता है। कोई भी अभिनेता, गायक-वादक, नर्तक मंच (stage) पर तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उसे अपनी सुप्त शक्ति का एहसास (realization) नहीं हो जाता है। योगी की भांति, अभिनेता को भी संसार में सर्वत्र, सर्व क्रियाकलापों में उस 'देवत्व' (divinity) के दर्शन की मनोवृत्ति बनानी होती है। नाट्य संगीत में ताल-शक्ति का संयम है, अंग-विक्षेप और हाव-भाव रसवृत्ति को अंकुश में रखते हैं। नाट्य संगीत शरीर के अवयवों को व्यायाम व स्फूर्ति तथा ज्ञान तन्तुओं और स्नायु को विश्राम भी देता है, जिससे अंग-सौष्ठव के साथ-साथ हृदय-सौष्ठव भी प्राप्त होता है।

शिव का नटराज रूप: भारतीय वाङ्मय के अनुसार शिव कैलाश पर्वतवासी एक योगी है। उनका नृत्य 'आदि-उर्जा' (primary energy) है। यह विश्व की नाट्यशाला, मंच (theatre, stage) है और शिव नर्तक है। शिव रूप सर्वत्र है, उनकी शिवशक्ति सर्वत्र व्यापिनी है। चिदम्बर सर्वत्र है, उनका नृत्य भी सर्वव्यापी है, इसलिए उनका मंगलमय नृत्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। उनके पांच प्रकार के नृत्य सकल और निष्कल रूप में होते हैं, उनके पंचनृत्य उनकी पंचक्रियाएं हैं। अपनी मंगलमयी कामना से वे पंचकर्म करते हैं। यही उमासहाय का दिव्य नृत्य है। ये जल, अग्नि, वायु और आकाश के साथ नाचते हैं। इस प्रकार हमारे प्रभु अपने प्रांगण में सर्वदा नृत्य किया करते हैं। प्रभु का यह अनादि और अनन्त नृत्य उन्हें ही दिखलाई पड़ता है, जो माया से नहीं, महामाया से भी ऊपर उठ चुके हैं।

शिव के इस नृत्य की योगी अपने हृदय में अनुभूति करता है। जिस योगी ने अपने आपको 'अहम्' (ego) की सीमाओं से मुक्त कर लिया है, वह ही और केवल वह ही शिव के इस नृत्य के आनन्द की अनुभूति कर सकता है। योगी भी अपने 'अहम्' को जब 'व्यष्टि' से 'समष्टि' में विलीन (विस्तृत) कर देता है, जब उसे जो आनन्दानुभूति होती है, उसकी उपमा किसी भी लौकिक सुखानुभूति से नहीं दी जा सकती। वहां जाकर जिह्वा मौन हो जाती है। वह वर्णनातीत है, क्योंकि यह अनुभूति का विषय है, यह 'यह गूंगे का गुड़' है। इस प्रकार, नर्तक की आत्मा शिव की आत्मा बन जाती है। प्रसिद्ध नर्तकी रूक्मिणी के अनुसार, नर्तन (dance) भी 'योग' है। विविध योगासनों द्वारा नर्तक में 'शारीरिक लचक' (elasticity) प्राणायाम द्वारा गायक में अलाप की तथा वादक में शरीर के विविध अंगों की कार्यक्षमता में वृद्धि की जा सकती है।

यदि हम अपना सामाजिक, कलासम्पन्न और आध्यात्मिक जीवन एक साथ समृद्ध करना है तो नाट्य संगीत और योग की ओर अपना ध्यान अग्रसित करना होगा और दोनों में सुसंगीत बनाना ही होगी। ऐसी सुसंगति बना सकने वाला साधक ही जागरूक, कुशल और उत्तम साधक कहा जा सकता है। योगियों और संगीतकारों को इस दृष्टि से सार्थक प्रयास अवश्य करने चाहिए।